ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३०१ -

ॐ युगावर्ताय नमः

काल के नियामक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Administrator of Yugas.

युगानि कृतादीनि आवर्तयति कालात्मना इति युगावर्तः, अर्थात् कालरूप से सत्ययुग आदि युगों का आवर्तन करते हैं, इसलिए वे युगावर्त हैं। परमात्मा ही काल के सृष्टा हैं। वे ही वह शक्ति हैं, जिसकी वजह से काल का चक्र सतत परिवर्तित हो रहा हैं और बारबार उसकी आवृत्ति होती रहती है। इस प्रकार वे काल के नियन्ता हैं।

उन काल के नियामक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३०२ -

ॐ नैकमायाय नमः

अनेक मायाधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Innumerable Cosmic Powers.

एका माया न विद्यते बह्वीः माया वहति इति नैकमायः अर्थात् जिनकी एक ही माया नहीं है, किन्तु जो अनेकों मायाओं को धारण करते हैं, वे भगवान नैकमाय हैं। परमात्मा का मायामय रूप अन्तहीन और विविधतापूर्ण है। सृष्टि का पालन करने तथा टिकाए रखने हेतु वे विविध प्रकार के रूप धारण करके अवतरित होते हैं, जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि दशावतार। प्रत्येक अवतार की अभिव्यक्ति तथा कार्य अत्यन्त विलक्षण होते हैं। इस प्रकार वे अनेक रूप धारण करने में समर्थ होने से नैकमाय कहे जाते हैं। उन अनेक मायावी रूपवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३०३ -

ॐ महाशनाय नमः

सब का ग्रास करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Great Swallower.

महद् अशनम् अस्य इति महाशनः। कल्पान्ते सर्वग्रसनात् अर्थात् कल्पान्त में सब को ग्रस लेते हैं, इसलिए भगवान का महान भोजन है, अतः वे महाशन कहलाते हैं। सृष्टि का प्रलय होने पर सृष्टि माया रूपा बीज अवस्था में समाहित हो जाती है। उन सब को ग्रसनेवाली माया को परमात्मा अपने अन्दर समाहित कर देते हैं, अतः वे सब का अशन करनेवाले महाशन कहलाते हैं।

उन महाशन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३०४ -

ॐ अदृश्याय नमः

अदृष्ट स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Imperceptible.

सर्वेषां बुद्धि-इन्द्रियाणाम् अगम्यः अदृश्यः अर्थात् समस्त ज्ञानेन्द्रियों के अविषय हैं, इसलिए अदृश्य हैं। बुद्धि और इन्द्रिय द्वारा अपने से पृथक् यह पंच महाभूत का बना हुआ स्थूल और सूक्ष्म जगत ही ग्रहण किया जाता है। परमात्मा इन पंच महाभूत के अन्तर्गत की कोई वस्तु नहीं हैं, किन्तु उसे भी आत्मवान् करने वाली चेतना हैं। अतः वे बुद्धि और इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण नहीं किए जा सकते हैं।

उन अदृष्ट स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३०५ -

ॐ व्यक्तरूपाय नमः

व्यक्तरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Perceptible.

स्थूलरूपेण व्यक्तं स्वरूपं अस्य इति व्यक्तरूपः; अर्थात् स्थूलरूप से भगवान का स्वरूप व्यक्त है, इसलिए वे व्यक्तरूप हैं। परमात्मा स्वयं तत्त्वतः अव्यक्त हैं, किन्तु वे ही अपनी मायाशक्ति से इन व्यक्तरूपों में अभिव्यक्त होते हैं। अथवा वेदान्त प्रतिपाद्य ज्ञान के द्वारा मनीषि उन्हें अपनी स्वयं प्रकाश आत्मा की तरह जान लेते हैं, अतः उनके लिए मानों वे व्यक्तरूप हैं।

उन व्यक्तरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३०६ -

ॐ सहस्रजिते नमः

सहस्र देवशत्रुओं को जीतनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who is Victorious over Innumerable.

सुरारीणां सहस्राणि युद्धे जयति इति सहस्रजित् अर्थात् युद्ध में सहस्रों देवशत्रुओं को जीतते हैं, इसलिए सहस्रजित् हैं। भगवान सृष्टि के पालन हेतु धर्ममार्ग का अनुसरण करनेवाले देवताओं की रक्षा करते हैं, उनकी रक्षा से ही सृष्टि में धर्म की व्यवस्था बनी रहती है। अतः भगवान धर्म की रक्षा हेतु स्वयं अवतरित होकर युद्ध के मैदान में धर्मपालन में विघ्नकर्ता असुरों का संहार करके विजयी होते हैं। अतः वे सहस्रजित कहे जाते हैं। उन सहस्रजित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३०७ –

ॐ अनन्तजिते नमः

अनन्त भूतों को जीतनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who is always Victorious.

सर्वाणि भूतानि युद्धक्रीडादिषु सर्वथा अचिन्त्यशक्तितया जयति इति अनन्तजित् अर्थात् अचिन्त्यशक्ति होने के कारण युद्ध और क्रीडा आदि में सर्वत्र समस्त भूतों को जीतते हैं, इसलिए अनन्तजित् हैं। भगवान युद्ध में विजयी होने के साथ साथ, क्रीडा में भी सदैव वे ही विजयी होते हैं। भगवान कृष्ण के अवतार में अपनी बाललीला में अपने गोपमित्रों से पराजित होकर भी वे उनके हृदय को जीत लेते हैं। इस प्रकार वे हर प्रकार से विजयी होने की वजह से अनन्तजित कहलाते हैं। उन अनन्तजित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३०८ -

ॐ इष्टाय नमः

प्रियरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Most Loved.

परमानन्दात्मकत्वेन प्रियः इति इष्टः अर्थात् परमानन्द–स्वरूप होने के कारण प्रिय हैं, इसलिए इष्ट हैं। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप हैं। सबको आनन्द प्रिय होता हैं। उसे ही पाने हेतु साधक जपादि साधना करता हैं, जिज्ञासु ज्ञान प्राप्त करता है, तथा संसारी विषयभोग करना चाहता है, क्योंकि सब के लिए जाने–अनजाने परमात्मा ही आनन्दरूप से इष्ट हैं।

उन प्रियरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३०९ -

ॐ अविशिष्टाय नमः

सबमें समान रूप व्याप्त प्रभु को नमन।

I salute the one who generically blesses all

सर्वेषां अन्तर्यामित्वेन अविशिष्टः अर्थात् सब के अन्तर्यामी रूप से सबमें समान रूप से व्याप्त हैं। प्रत्येक जीव औपाधिक तादात्म्य से युक्त होने के कारण विशिष्टता से युक्त होता है। परमात्मा उन सब विशिष्टताओं को प्रकाशित करनेवाले प्रकाशस्वरूप, सामान्य सूत्र, अर्थात उनकी आत्मा की तरह से हैं। गीता में भगवान स्वयं कहते हैं, सूत्रे मणिगणा इव। संकुचित करने वाली उन समस्त विशेषताओं से रहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३१० –

ॐ शिष्टेष्टाय नमः।

ज्ञानियों के प्रिय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the most beloved of wise.

शिष्टानां विदुषां इष्टः शिष्टेष्टः अर्थात् शिष्ट अर्थात् विद्वानों के इष्ट हैं, इसलिए शिष्टेष्ट हैं। जो परमात्मा का वरण करता है, उनके लिए ही वे अपने स्वरूप को प्रकट करते हैं। विवेकी विद्वान इस नश्वर एवं जड़ संसार के प्रति वैराग्य से युक्त होकर परमात्मा का ही वरण करता हैं। उन्हें परमात्मा अपनी आत्मा की तरह से ज्ञात एवं प्रिय हैं। अतः परमात्मा शिष्टेष्ट हैं।

उन विद्वानों के प्रिय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३११ -

ॐ शिखण्डिने नमः

मोरपंखरूप आभूषण धारण करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who wears a peacock feather.

शिखण्ड: कलापोऽलंकार: अस्य इति शिखण्डी यतो गोपवेषधर: अर्थात् शिखण्ड-कलाप अर्थात् मोरपंख भगवान का शिरोभूषण है अत: वे शिखण्डी हैं, क्योंकि वे गोपवेषधारी हुए थे। भगवान श्रीकृष्ण के अवतार में गोपवेष को धारण करके गौ चराने हेतु जंगल में विचरण करते थे। तब वे आसानी से उपलब्ध मोरपंख को सिर पर आभूषण की तरह धारण करते थे। अत: वे शिखण्डी कहलाते हैं।

उन मयूरपंख धारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३१२ -

ॐ नहुषाय नमः

माया से बांधनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who binds with Maya.

नह्यति भूतानि मायया अतः नहुषः अर्थात् भूतों को माया से नद्ध करते हैं, अर्थात् बांधते हैं, इसलिए नहुष हैं। परमात्मा की मायाशक्ति अचिन्त्य तथा बलशाली है। परमात्मा की माया से उत्पन्न इस जगत के प्रत्येक जीव मोहित होकर उनके वश में आकर जीते हैं। वस्तुतः परमात्मा किसी को बांधते नहीं हैं, हम सब अपने अज्ञान से मोहित होकर स्वयं माया के कार्यों से बंध जाते हैं। जगत को मोहित कर देने वाली, दिव्य माया के पति रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३१३ -

ॐ वृषाय नमः

धर्म रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of the form of Dharma.

कामानां वर्षणात् वृषः धर्मः; 'विद्धि मां वृषमुत्तमम्' इति महाभारते अर्थात् कामनाओं की वर्षा करने के कारण धर्म को वृष कहते हैं। महाभारत में कहा है कि 'हे भरत! मुझे तुम उत्तम वृष ही जानों।' मनुष्य संसार में सुख प्राप्ति करने हेतु सतत कर्मरत रहता है। जो धर्म का पालन करता है, उन्हें परमात्मा के द्वारा सुख की प्राप्ति होती है। परमात्मा ही कर्म के फल देने के द्वारा कामना की वर्षा करते हैं। अतः वे वृष हैं। उन धर्म रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३१४ -

ॐ क्रोधघ्ने नमः

क्रोध को नष्ट करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who destroys the Anger.

साधूनां क्रोधं हन्ति इति क्रोधहा अर्थात् साधुओं का क्रोध नष्ट करते हैं, इसलिए क्रोधहा हैं। जब कामना की पूर्ति नहीं होती है, तो उसका परिणाम क्रोध होता है। कामना का मूल कारण अज्ञान और तज्जनित मोह होता है। जो परमात्मा का साक्षात्कार कर लेता है, उसकी इस अविद्या और तज्जनित कामनाएं समाप्त हो जाती है, इसकी वजह से क्रोध का भी स्थान नहीं रहता है। इस प्रकार मानों परमात्मा ही क्रोध को नष्ट करते हैं। उन क्रोध को नष्ट करनेवाने परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३१५ -

ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नमः

क्रोध करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Generates Anger.

असाधुषु क्रोधं करोति इति क्रोधकृत् अर्थात् जो साधु नहीं है, उन पर क्रोध करते हैं। असाधु अर्थात् जो भी अधर्म के मार्ग पर चलता है, भगवान उसे उसके इन कर्मों का पापरूप फल प्रदान करते हैं। इसके फलस्वरूप उसे कष्ट की अनुभूति होती है। इस प्रकार उसके पापरूप फल प्रदान करने के द्वारा वे अपना क्रोध उसके प्रति प्रकट करते हैं।

उन क्रोध करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३१६ -

ॐ विश्वबाहवे नमः

अनन्त हाथों वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is with infinite Hands.

विश्वतो बाहवो अस्य इति वा विश्वबाहुः अर्थात् सभी भगवान के ही बाहु हैं, अथवा उनके बाहु सब ओर हैं, इसलिए वे विश्वबाहु हैं। जगत में जितने भी शरीरधारी हैं, उन सबकी आत्मा एक ही है। उस आत्मा की दृष्टि से देखें तो उसी के समस्त शरीर हैं, और सभी शरीर के हाथ पैर भी उसी के हैं। हाथ कर्ता के सूचक भी होते हैं, अतः जो भी जहां भी कुछ करता है, वह परमात्मा ही करते है। ऐसे अनन्त बाहु वाले विश्वबाहु परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३१७ -

ॐ महीधराय नमः

पृथ्वी को धारण करनेवाले प्रभु को नमन।

I salute the one who is the weilder of Earth.

महीं धरणीं धरति इति महीधरः अर्थात् जो मही, पृथ्वी, को धारण करते हैं, वे महीधर हैं। पृथ्वी एक जीवन्त लोक है, ईश्वर ने ऐसी अद्भुत प्राकृतिक व्यवस्था और पर्यावरण का संतुलन बनाया है जिसके कारण पृथ्वी जीवन के अनुकूल बनी हुई है। अन्तरिक्ष से देखें तो पृथ्वी आश्चर्यजनक ढंग से एक गेंद की तरह से अनन्त आकाश में टिकी हुई है। ऐसी पृथ्वी को धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३१८ -

ॐ अच्युताय नमः

षड्विकार रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who transcends change.

षड्भावविकाररहितत्वात् अच्युतः अर्थात् छ–भावविकारों से रहित होने के कारण वे अच्युत हैं। परमात्मा अजन्मा, शाश्वत हैं। अतः अस्तित्व को प्राप्त होना, जन्म, वृद्धि, परिवर्तन, क्षय और मृत्यु रूप छह विकार का अभाव है। इसके कारण वे अच्युत हैं। परमात्मा की कभी भी अपने पूर्णस्वरूपता से च्युति नहीं होती है।

उन अच्युत स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३१९ –

ॐ प्रथिताय नमः

विख्यात परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Famous.

जगत् उत्पत्त्यादि कर्मभिः प्रख्यातः प्रथितः अर्थात् जगत की उत्पत्ति आदि कर्मो के कारण प्रसिद्ध हैं, इसलिए प्रथित हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय करते हैं। उनका कर्म इसलिए और भी विशिष्ट है क्योंकि वे इन कर्म से अलिप्त रहते हैं। इस प्रकार जगत हेतु विलक्षण तरीके से किए हुए कर्म की वजह से वे विख्यात हैं। उन विख्यात परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३२० -

ॐ प्राणाय नमः

जीवनदाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Life in all Living Beings.

सूत्रात्मना प्रजाः प्राणयति इति प्राणः 'प्राणो वा अहमस्मि' इति बह्वृचाः अर्थात् हिरण्यगर्भ रूप से प्रजा को जीवन देते हैं इसलिए प्राण हैं। इस विषय में 'मैं प्राण हूं' यह श्रुति प्रमाण है। प्राण जीवन की अभिव्यक्ति का नाम है। परमात्मा ही विविध उपाधियों के माध्यम से मानों प्राणनक्रिया करके उसे जीवन्त बना रहे हैं। अतः वे ही प्राण हैं। उन प्रजा के जीवनदाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३२१ –

ॐ प्राणदाय नमः

प्राण देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Giver of Life.

सुराणाम् असुराणां च प्राणं ददाति इति प्राणदः अर्थात् देवताओं और दैत्यों आदि सभी को प्राण अर्थात् बल देते हैं, इसलिए प्राणद हैं। परमात्मा ही धर्मानुसरण करनेवाले देवताओं को बल प्रदान करते हैं, जिससे वे उत्साहपूर्वक धर्मानुसरण कर सकें। केवल देव और असुर ही नहीं बल्कि जो परमात्मा सभी जीवों को जीवनदान एवं बल देते हैं उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३२२ –

ॐ वासवानुजाय नमः

इन्द्र के अनुज परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the younger brother of Indra.

अदित्यां कश्यपाद् वासवस्य अनुजो जात इति वासवानुजः अर्थात् कश्यप और अदिति से वासव (इन्द्र) के अनुज रूप से उत्पन्न हुए थे, इसलिए वासवानुज हैं। जब असुरों ने देवताओं को परास्त करके तीनों लोक पर शासन स्थापित कर लिया तब अदिति ने अपने पुत्र इन्द्र की असुरों से रक्षा हेतु भगवान से प्रार्थना की। उनकी सविनय प्रार्थना सुनकर वे स्वयं अदिति और कश्यप के पुत्र की तरह अवतरित हुए और इन्द्र की रक्षा की। उन इन्द्र के अनुजरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३२३ -

ॐ अपांनिधये नमः

जल की निधिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Ocean.

आपो यत्र निधीयते सः अपां निधिः, 'सरसामस्मि सागरः' इति भगवद् वचनात् अर्थात् जिसमें अप् अर्थात् जल एकत्रित रहता है, उस समुद्र को अपां निधि कहते हैं। 'सरों में मैं सागर हूं' इस भगवान के वचनानुसार भगवान की विभूति होने के कारण उनका नाम अपांनिधि है। भगवान की अनेकानेक महान विभूतियों में से एक विभूति समुद्र है। यह ऐसी महान विभूति है कि, भगवान विष्णु स्वयं इसी में शयन करते हैं। उस जल की निधिरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३२४ -

ॐ अधिष्ठानाय नमः

सब के आधारभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Substratum of Everything.

अधितिष्ठन्ति भूतानि उपादानकारणत्वेन ब्रह्म इति अधिष्ठानम्, 'मत्स्थानि सर्वभूतानि' इति भगवद् वचनात् अर्थात् उपादान कारणरूप से सब भूत ब्रह्म में स्थित हैं, इसलिए वह अधिष्ठान हैं, जैसा कि भगवान कहते हैं कि 'सब भूत मुझमें ही स्थित है।' अधिष्ठान वह होता है कि जिस पर कोई चीज आरोपित की जाए, जो काल्पनिक होते हुए भी जिसके द्वारा सत्ता-स्फुर्ति को प्राप्त हो। यह समस्त नामरूपात्मक जगत तथा उसका कारण माया परमात्मा पर उसी तरह अध्यस्त है, जिस प्रकार रस्सी पर सांप होता है।

उन अधिष्ठान स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३२५ -

ॐ अप्रमत्ताय नमः

प्रमादरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is ever Vigilant.

अधिकारिभ्यः कर्मानुरूपं फलं प्रयच्छन्न प्रमाद्यति इति अप्रमत्तः अर्थात् अधिकारियों को उनके कर्मानुसार फल देते हुए कभी प्रमाद नहीं करते, इसलिए अप्रमत्त हैं। प्रत्येक जीव को उनके अच्छे व बुरे कर्म के अनुरूप कर्मफल देनेवाले परमात्मा हैं। इसमें कभी भी कोई गलती नहीं होती कि अन्य के कर्म का फल अन्य को प्राप्त हो जाए। सबको उचित समय पर फल प्राप्त होता ही है, तथा इस प्रकार से मिलता है, जिससे सृष्टि की व्यवस्था में बाधा भी न हो। इस प्रकार प्रमादरहित होकर सबको फल प्रदान करने के कारण वे अप्रमत्त कहलाते हैं। उन प्रमादरहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३२६ -

ॐ प्रतिष्ठिताय नमः

स्व महिमा में स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is ever established in his own Greatness.

स्वे महिम्ने स्थितः प्रतिष्ठितः, अर्थात् अपनी महिमा में स्थित हैं, इसलिए प्रतिष्ठित हैं। सम्पूर्ण जगत का अस्तित्व उसके कारणभूत तत्त्व पर आश्रित है। जैसे घडे का होना माटी के उपर निर्भर है। सब के जो आधारभूत जो तत्त्व हैं, वे परमात्मा हैं। उनका होना किसी पर आश्रित नहीं है। अतः उनका कभी भी अन्त नहीं होता। इस प्रकार वे सदैव अपनी पूर्णस्वरूपता की महिमा में स्थित होने से प्रतिष्ठित है। उन सब के प्रतिष्ठारूप एवं स्वयं अपनी महिमा में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३२७ -

ॐ स्कन्दाय नमः

स्कन्दरूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is in the form of Skanda.

स्कन्दति अमृतरूपेण गच्छति वायुरूपेण शोषयति इति वा स्कन्दः अर्थात् स्कन्दन करते हैं, अर्थात् अमृतरूपसे बहते वा वायुरूप से सुखाते हैं, इसलिए स्कन्द हैं। स्कन्द पुराणानुसार शिवजी के पुत्र जिसका जन्म तारकासुर के विनाश हेतु हुआ था। वे देवताओं के सेनापति थे। असुरों के साथ युद्ध में वे सदैव अमर रहे, कभी भी परास्त नहीं हुए तथा असुरों के लिए वे आंधी की तरह वेगवान होकर उनके बल को मानो वायु की तरह सूखा देते थे। अतः शिवपुत्र स्कन्द परमात्मा की विभूति की तरह अभिव्यक्ति हैं। उन स्कन्द रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३२८ -

ॐ स्कन्दधराय नमः

धर्ममार्ग धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who upholds the Rightous Path.

स्कन्दं धर्मपथं धारयति इति स्कन्दधरः अर्थात् धर्ममार्ग को धारण करते हैं, इसलिए स्कन्दधर हैं। स्वयं परमात्मा ने देवताओं की रक्षा के माध्यम से धर्म की रक्षा हेतु स्कन्द के रूप में व्यक्त हुए थे। अतः वे स्कन्द के रूप में असुरों का विनाश करते हैं। इस प्रकार वे धर्मपथ को धारण करनेवाले हैं।

उन धर्मपथ को धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३२९ -

ॐ धुर्याय नमः

जन्मादिरूप धुर के धारयिता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Supports All Beings

धुरं वहति समस्तभूतजन्मादिलक्षणाम् इति धुर्यः अर्थात् समस्त भूतों के जन्मादिरूप धुर को धारण करते हैं, इसलिए धुर्य हैं। जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय रूप कार्य किसी नियम और संविधान के अन्तर्गत होता है। अतः यह कार्य अत्यन्त जिम्मेदारी के साथ होना पडता है। परमात्मा ही अपनी मायाशक्ति को वश में करके इस व्यवस्था का निर्वाह करते हैं। अतः वे धुर्य है। उन सबको धारण करनेवाने परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३० -

ॐ वरदाय नमः

इष्ट वर देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who gives Boons.

अभिमतान् वरान् ददाति इति अर्थात् इच्छित वर देते हैं इसलिए वरद हैं। भगवान के प्रति जो भी शरणागत होता है, उनकी भक्ति और शरणागति को देखकर वे द्रवित हो उठते हैं, तथा उसे इच्छित वर प्रदान करते हैं, इसलिए वे वरद कहलाते हैं।

उन वरद रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३१ -

ॐ वायुवाहनाय नमः

वायु को चलानेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Controller of Winds.

मरुतः सप्तः आवहादीन वाहयति इति वायुवाहनः अर्थात् आवह आदि सात वायुओं को चलाते हैं, इसलिए वायुवाहन हैं। आवह, प्रवह, अनुवह, संवह, विवह, परावह और परिवह इस प्रकार स्थानभेद से ये वायु के सात भेद हैं। वायु पंचमहाभूत में का ही एक महाभूत होने से स्वयं जड़ है। किन्तु वह सतत विविध लोक व स्थान में संचार करता है। जो उसे संचरण हेतु समर्थ बनाता है, वे परमात्मा ही हैं। उन वायु को चलानेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३२ -

ॐ वासुदेवाय नमः

वासुदेव रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who dwells in everything.

वसति वासयति आच्छादयति सर्वम् इति वा वासु:; द्योतते इति वा देवः वासुश्च असौ देवश्च इति वासुदेवः अर्थात् सबको वासित, आच्छादित करते हैं इसलिए वासु हैं, तथा प्रकाशित होते हैं इसलिए देव हैं, इस प्रकार जो वासु भी है और देव भी है, वे वासुदेव हैं। परमात्मा ही समस्त जगत में सच्चित् रूप से व्याप्त हैं, तथा वे ही प्रत्येक जीव के हृदय में स्वयं प्रकाशस्वरूप चिन्मयी सत्ता की तरह स्थित होने की वजह से वासुदेव कहलाते हैं।

उन वासुदेव रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३३ -

ॐ बृहद्भानवे नमः

महान किरणोंवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has infinite Rays.

बृहन्तो भानवो यस्य चन्द्रसूर्यादिगामिनः। तैर्विश्वं भासयति यः स बृहद्भानुरुच्यते।। अर्थात् 'जिसकी सूर्य और चन्द्रमा आदि में जानेवाली अति महान् किरणें हैं और जो उन किरणों से सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करता है, वह परमात्मा बृहद्भानु कहलाते हैं।' यह प्रसिद्ध है कि सूर्य और चन्द्रमा की किरणों से समस्त विश्व प्रकाशित होता है। उन सूर्यादि को प्रकाशित करनेवाले परमात्मा ही है। अतः वे बृहद्भानु कहलाते हैं। उन महान किरणोंवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३४ -

ॐ आदिदेवाय नमः

सबके आदि प्रकाशस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Primary Cause & Self Effulgent.

आदिः कारणम्, स च असौ देवश्च इति आदिदेवः द्योतनादि गुणवान् देवः। अर्थात् सबके आदि अर्थात् कारण हैं, और प्रकाशन गुणवान होने से देव भी हैं, इसलिए आदिदेव हैं। परमात्मा से ही समस्त ज्ञत की उत्पत्ति हुई है, किन्तु परमात्मा किसी से उत्पन्न नहीं हुए हैं। अर्थात् परमात्मा सब के कारण हैं, किन्तु परमात्मा का कोई भी कारण नहीं है अतः वे आदि हैं तथा स्वयंप्रकाश स्वरूप होने से देव हैं। एवं परमात्मा आदिदेव हैं। उन आदिदेव रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३५ -

ॐ पुरन्दराय नमः

पुरों को नष्ट करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the destroyer of the cities.

सुरशत्रूणां पुराणां दारणात् पुरन्दरः अर्थात् देवशत्रुओं के पुरों का ध्वंस करने के कारण पुरन्दर हैं। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति रूप तीन नगरों में आवागमन का हेतु अज्ञान और तज्जनित अनात्मा से तादात्म्य है। अतः परमात्मा हृदय में होते हुए भी उनके दर्शन नहीं कर पाते हैं। अतः शास्त्र और गुरु के रूप में विवेक प्रदान करके शत्रुरूप अज्ञान और तज्जनित तादात्म्य को समाप्त करते हैं। इस प्रकार तीनों नगर को मानों समाप्त करते हैं। उन जाग्रदादि अवस्था रूप नगरों को नष्ट करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३६ -

ॐ अशोकाय नमः

शोक रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is without Sorrows

शोकादि षड् ऊर्मिवर्जितः अशोकः अर्थात् शोकादि छह ऊर्मियों से रहित होने के कारण परमात्मा अशोक हैं। शोक, मोह, क्षुधा, पीपासा, जरा और मृत्यु रूप षड् ऊर्मियां होती है। जिसका भी जन्म होता है, वहां यह छह ऊर्मियां स्वाभाविक होती है। ये छह ऊर्मियां शरीरादि उपाधि के धरातल पर होती है तथा यह अज्ञान और उसके कारण अनात्मा में आत्मबुद्धि होने पर ही होती है। परमात्मा में न तो अज्ञान है अतः उनमें न ही तज्जनित इन ऊर्मियों का नामोनिशान है। एवं परमात्मा शोकादि से रहित है। उन शोकरहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३७ -

ॐ तारणाय नमः

संसार से तारनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who takes Beings across the Ocean of Samsara.

संसारसागरात् तारयति इति तारणः अर्थात् संसार सागर से तारते हैं, इसलिए वे तारण हैं। संसार का हेतु परमात्मा का अज्ञान है। यह परमात्मा हमारी आत्मा की तरह से ही स्थित है। परमात्मा को अपनी आत्मा की तरह से जान लेना ही मुक्ति है। परमात्मा के प्रति भक्ति होने पर ही ज्ञान की प्राप्ति होती है इस प्रकार परमात्मा संसारसागर से परे ले जाते हैं। उन संसारसागर से तारनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३८ -

ॐ ताराय नमः

जन्मादि भय से मुक्त करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who is the Savior.

गर्भजन्मजरामृत्युलक्षणाद् भयात् तारयति इति तारः अर्थात् गर्भ–जन्म–जरा–मृत्युरूप भय से तारते हैं, इसलिए तार हैं। परमात्मा के प्रति जो भी शरणागत होता है, परमात्मा उन्हें गुरु के रूप में अवतरित होकर अपना ज्ञान प्रदान करते हैं, जिससे कि वह इस जन्म–मृत्युरूप संसार के भय से मुक्त हो जाता है। अतः उन्हें तार कहा जाता है।

उन जन्मादि रूप भय से तारनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३९ -

ॐ शूराय नमः

विक्रमी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Most Valiant.

विक्रमणात् शूरः अर्थात् विक्रम यानी पुरुषार्थ करने के कारण शूर हैं। परमात्मा ही हमारे जीवन में समस्त बल और शक्ति के वास्तविक स्रोत हैं। जीव द्वारा लौकिक वा पारलौकिक सुख की प्राप्ति हेतु, तथा मोक्ष हेतु जो कुछ भी पुरुषार्थ किए जाते हैं, उसके लिए बल और सामर्थ्य के वास्तविक स्रोत परमात्मा ही हैं। अतः वे ही शूर अर्थात् पुरुषार्थ करनेवाले हैं।

उन पुरुषार्थ करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३४० -

ॐ शौरये नमः

शूरसेन के वंशज श्रीकृष्ण को नमस्कार।

I salute the one who is of the lineage of Shoorsen.

शूरस्य अपत्यं वसुदेवस्य सुतः शौरिः अर्थात् शूर की संतान अर्थात् वसुदेव के पुत्र होने से शौरि हैं। वसुदेव शूरसेन के पुत्र थे। भगवान कृष्ण शूरसेन के वंशज होने की वजह से शौरि कहलाते हैं।

उन वसुदेवनन्दन श्रीकृष्ण परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३४१ -

ॐ जनेश्वराय नमः

जीवों के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of Jivas.

जनानां जन्तूनां ईश्वरः जनेश्वरः अर्थात् जन अर्थात् जीवों के ईश्वर होने से जनेश्वर हैं। जीव अपने कर्म के अनुरूप जन्म को प्राप्त करता हैं, तथा नए नए कर्म करता हैं। परमात्मा जीव के उन उन कर्म के फल प्रदान करने के द्वारा उसका शासन करते हैं। इस प्रकार परमात्मा समस्त जीवों के ईश्वर होकर उन्हें संचालित करते हैं।

उन जीवों के स्वामी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३४२ –

ॐ अनुकूलाय नमः

अनुकूल स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the embodiment of cordiality

आत्मत्वेन हि सर्वेषां अनुकूलः, न हि स्वस्मिन् प्रातिकूल्यं स्वयमाचरति अर्थात् सब के आत्मरूप होने से अनुकूल हैं, क्योंकि कोई भी अपने प्रतिकूल आचरण नहीं करता। इसलिए भगवान आत्मभाव से अनुकूल हैं। सबको अपनी आत्मा सबसे प्रिय होती है। अतः सब अपने आपके अनुकूल ही आचरण करते हैं। परमात्मा ही सबकी आत्मा की तरह से होते हैं। अतः परमात्मा अनुकूल हैं।

उन सबकी आत्मारूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३४३ -

ॐ शतावर्ताय नमः

सहस्र देवशत्रुओं को जीतनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who is Victorious over Innumerable.

धर्मत्राणाय शतम् आवर्तनानि प्रादुर्भावा अस्य इति शतावर्तः अर्थात् धर्मरक्षा के लिए भगवान के सैंकड़ों अवतार हुए हैं, इसलिए वे शतावर्त हैं। जब जब पृथ्वी पर अधर्म की वृद्धि होती है, और धर्म का ह्रास होता है तो जगत की रक्षा हेतु भगवान स्वयं विविध अवतार धारण करके आते हैं और सन्मार्गगामी देवताओं की रक्षा हेतु असुरों का संहार करते हैं। ऐसे देवशत्रुओं का विनाश करनेवाले भगवान शतावर्त हैं। उन शतावर्त रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३४४ –

ॐ पद्मिने नमः

कमल पुष्पधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bearer of Lotus

पद्म हस्ते विद्यते इति पद्मी अर्थात् भगवान के हाथ में कमल है, इसलिए वे पद्मी हैं। परमात्मा एक हाथ में शस्त्र धारण करते हैं; तो दूसरे हाथ में कमल भी धारण करते हैं। कमल धर्म, संस्कृति तथा विवेक का सूचक है। जो भी परमात्मा के प्रति समर्पित होता है, उन्हें ऐसा ज्ञान प्रदान करते हैं, जिससे वे जीवन के इस महान लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। ऐसे भक्त के प्रति सहृदय परमात्मा भक्त के कल्याण हेतु कमल को धारण किए हैं। उन कमल के पुष्प से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३४५ -

ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः

कमल के समान नेत्रवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has Eyes like Lotus

पद्मनिभे ईक्षणे दृशौ अस्य इति पद्मनिभेक्षणः अर्थात् उनके ईक्षण अर्थात् नेत्र पद्म के समान हैं, इसलिए वे पद्मनिभेक्षण हैं। भगवान के नेत्र कमल के सदृश अत्यन्त सुन्दर और विशाल है। इसलिए वे पद्म के समान नेत्रवाले कहलाते हैं।

उन कमलसदृश नेत्रवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३४६ -

ॐ पद्मनाभाय नमः

हृदयकमल में स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who resides in lotus-like heart

पद्मस्य नाभौ मध्ये कर्णिकायां स्थित इति पद्मनाभः अर्थात् हृदय रूप पद्म की नाभि में स्थित हैं, इसलिए पद्मनाभ हैं। हृदय का आकार कमल के पुष्प के समान होता है तथा परमात्मा समस्त प्राणीमात्र के हृदय में स्थित होने की वजह से उन्हें पद्मनाभ कहा जाता है।

उन हृदय कमल के मध्य में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३४७ -

ॐ अरविन्दक्षाय नमः।

कमल के सदृश्य नेत्रवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one whose Eyes are like Lotus

अरविन्दसदृशे अक्षिणी अस्य इति अरविन्दाक्षः अर्थात् भगवान की आंख अरविन्द कमल के समान है, इसलिए वे अरविन्दाक्ष हैं। परमात्मा के नेत्र न केवल सुन्दर और विशाल है; किन्तु वे जगत के प्रति संवेदनशील रहते हुए पालन भी करते हैं। किन्तु उनकी दृष्टि भी कमलपुष्प की तरह है, जो जगत को देखकर भी उसके दोषों से अलिप्त रहती हैं।

उन कमलनयन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३४८ –

ॐ पद्मगर्भाय नमः

हृदय की गहराइयों में स्थित प्रभु को नमन।

I salute the one who dwells deep in Heart.

पद्मस्य हृदयाख्यस्य मध्ये उपास्यत्वात् पद्मगर्भः अर्थात् हृदयरूप पद्म के मध्य में उपासना किए जाने के कारण पद्मगर्भ हैं। परमात्मा सभी प्राणीमात्र के हृदय में चेतना की तरह अभिव्यक्त होते हैं। अतः योगी लोग परमात्मा की उपासना हृदयकमल की गहराइयों में स्थित चेतना के रूप में करते हैं। अतः वे पद्मगर्भ कहे जाते हैं।

उन हृदयकमल में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३४९ -

ॐ शरीरभृते नमः

शरीरधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the weilder of the body.

स्वमायया शरीराणि बिभर्ति इति शरीरभृत अर्थात् अपनी माया से शरीर धारण करते हैं, इसलिए शरीरभृत हैं। जब जब सृष्टि को धर्मरक्षा हेतु परमात्मा की आवश्यकता होती है, तब तब परमात्मा अपनी मायाशक्ति के द्वारा शरीर धारण करके अवतरित होते हैं। इसलिए वे शरीरधारी कहे जाते हैं।

उन माया से शरीर को धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३५० -

ॐ महर्द्धये नमः

महान् ऐश्वर्ययुक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Great Glory.

महती ऋद्धिः विभूतिः अस्य इति महर्द्धिः अर्थात् भगवान की ऋद्धि अर्थात् विभूति महान् है, इसलिए वे महर्द्धि हैं। भगवान ऐश्वर्य की निधि हैं। जगत में जो कुछ भी ऐश्वर्य अभिव्यक्त हैं, वह सब उन परमात्मा का लेश मात्र ही हैं। उनसे हम अनुमान लगा सकते हैं कि, परमात्मा का ऐश्वर्य कितना महान होगा!

उन महान ऐवश्‍र्ययुक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३५१ -

ॐ ऋद्धाय नमः

विस्तार को प्राप्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Immensely Expanded

प्रपंचरूपेण वर्तमानत्वाद् ऋद्धः अर्थात् प्रपंचरूप होने से वे ऋद्ध हैं। परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति को धारण करके इस पंचमहाभूतात्मक जगत की तरह से अभिव्यक्त होते हैं। एवं परमात्मा समस्त महाभूत के प्रपंच की तरह विस्तार को प्राप्त होने की वजह से ऋद्ध कहे जाते हैं।

उन प्रपंच रूप से विस्तृत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३५२ -

ॐ वृद्धात्मने नमः

सब से वृद्ध परमात्मा को नमस्कार।

I salute the most ancient one.

वृद्धः पुरातन आत्मा यस्य इति वृद्धात्मा अर्थात् जिनकी आत्मा वृद्ध अर्थात् पुरातन है, वे भगवान वृद्धात्मा हैं। समस्त जगत तथा उनके कारणभूत पंचमहाभूत आदि सब की उत्पत्ति स्वयं परमात्मा से हुई है। अर्थात् परमात्मा इन जगत और उसके कारण से पूर्व में भी थे। अतः वे वृद्धात्मा कहे जाते हैं।

उन सब से वृद्ध परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३५३ -

ॐ महाक्षाय नमः

महान आंखों वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the big eyed one.

महती अक्षिणी महान्ती अक्षीणि वा अस्य इति महाक्षः अर्थात् भगवान की महान आंखें है, इसलिए वे महाक्ष हैं। आंखें वह होती है, जिसके माध्यम से हम इस स्थूल दृश्यमान जगत को देखते है। किन्तु परमात्मा की ऐसी महान् दृष्टि है कि, वे न केवल स्थूल जगत को देखते हैं, किन्तु उसके पीछे विद्यमान कारण तथा उनसे परे, अधिष्ठानभूत तत्त्व को भी देखते हैं। अतः वे महान नेत्रचाले कहलाते हैं।

उन महान नेत्रधारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३५४ -

ॐ गरुडध्वजाय नमः

गरुडांकित ध्वजावाले परमात्मा को नमन।

I salute the one who is Eagle Bannered.

गरुडांको ध्वजो यस्य इति गरुडध्वजः अर्थात् जिनकी ध्वजा गरुड़ के चिह्नवाली है, इसलिए वे गरुड़ध्वज हैं। भगवान विष्णु का सब से तेज गति से उड़ने वाला पक्षी गरुड वाहन है, तथा उनकी ध्वजा में भी उन्हें विशेष स्थान प्राप्त होने की वजह से वे गरुडध्वज कहे जाते है।

उन गरुडांकित ध्वजा से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३५५ -

ॐ अतुलाय नमः

अतुलनीय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Unrivalled.

तुलोपमानम् अस्य न विद्यते इति अतुलः, 'न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः इति श्रुतेश्च अर्थात् भगवान की कोई तुलना वा उपमा नहीं है, इसलिए वे अतुल्य हैं। श्रुति कहती है-जिसका नाम ही महान यश है, उस परमात्मा की कोई तुलना नहीं हैं।' परमात्मा किसी के द्वारा निर्मित नहीं हैं। अतः उनके धरातल का तथा उनके समान अन्य कुछ भी हो ही नहीं सकता। अतः वे अतुलनीय हैं।

उन अतुलनीय स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३५६ -

ॐ शरभाय नमः

शरीरस्थ अन्तर्तम आत्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Self-luminous.

शराः शरीराणि शीर्यमाणत्वात् तेषु प्रत्यगात्मतया भाति इति शरभः अर्थात् नाशवान होने के कारण शरीर को ही शर कहते हैं, उसमें प्रत्यगात्मा की तरह भासते हैं, इसलिए शरभ हैं। परमात्मा प्रत्येक शरीर में चेतना रूप से वास करते हैं, जिसके कारण नाशवान और जड़ शरीर भी चेतनवान, जीवन्त प्रतीत होता है। प्रत्येक नाशवान शरीर की अन्तर्तम आत्मा होने से वे शरभ कहलाते हैं।

उन शरभ स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३५७ -

ॐ भीमाय नमः

भयानक स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Terrible.

बिभेति यस्मात् सर्वमिति भीमः अर्थात् जिनसे सब भयभीत होते हैं, इसलिए वे भीम हैं। मनुष्य के पास कर्म की स्वतंत्रता है, वह धर्म की मर्यादा में रहकर कर्म करता है, क्योंकि भगवान ही कर्मफल प्रदाता हैं। अतः पाप-पुण्य के अनुरूप कर्म का हिसाब वे ही करते हैं। इस ज्ञान के कारण पापफल से भयभीत होकर वह अपने अपने धर्म का पालन करता है।

उन भीम रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३५८ -

ॐ समयज्ञाय नमः

काल के ज्ञाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Knower of Time

सृष्टिस्थितिसंहारसमयवित्, षट्समयान् जानाति इति वा समयज्ञः अर्थात् सृष्टि, स्थिति और संहार के समय को तथा छह ऋतुओं को जाननेवाले हैं, इसलिए समयज्ञ हैं। परमात्मा से ही काल की उत्पत्ति हुई है, तथा वे स्वयं काल से परे होने की वजह से समस्त काल के चक्र के ज्ञाता हैं। काल के चक्र के अन्तर्गत ही सृष्टि, प्रलय, ऋतुओं का चक्र आदि का समावेश होता है।

उन काल के ज्ञाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३५९ –

ॐ हविर्हरये नमः

यज्ञ की आहुति ग्रहण करनेवाले परमात्मा को नमन।

I salute the one who is Recipient of Oblations.

यज्ञेषु हविः भागं हरति इति हविर्हरिः अर्थात् यज्ञों में हवि का भाग हरण करते हैं, इसलिए हविर्हरि हैं। वेदों में प्रसिद्ध द्रव्ययज्ञ में जिन आहुतिओं को इन्द्रादि देवताओं को प्रदान की जाती है, वे स्वयं परमात्मा ही ग्रहण करते हैं, क्योंकि वे ही सब के अन्दर भोक्तारूप से स्थित हैं। अतः वे हविर्हरि कहलाते हैं।

उन यज्ञ की आहुति ग्रहण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६० -

ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः

लक्षणाओं से लक्षित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Realized through Enquiry.

सर्वैः लक्षणैः प्रमाणैः लक्षणं ज्ञानं जायते यत्तत् सर्वलक्षणलक्षणम्, अर्थात् सब प्रमाणों से जिन लक्षण का ज्ञान होता है, वह सर्वलक्षण लक्षणा कहलाता है, वह परमात्मा ही सर्वलक्षणलक्षण्य हैं। परमात्मा शब्दातीत होने की वजह से वाणी के द्वारा वर्णित करके उन्हें नहीं जाना जा सकता है। उन्हें जानने हेतु लक्षणा का आश्रय लिया जाता है, जिससे वे लक्षित हो सकते हैं, विषयीकृत नही। शास्त्रोक्त लक्षणाओं से लक्षित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६१ -

ॐ लक्ष्मीवते नमः

लक्ष्मीवान् परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Consort of Lakshmi.

लक्ष्मीः अस्य वक्षसि नित्यं वसति इति लक्ष्मीवान् अर्थात् भगवान के वक्षःस्थल में लक्ष्मीजी नित्य निवास करती हैं, अतः वे लक्ष्मीवान हैं। जो भी भगवान के प्रति सम्पूर्ण रूप से समर्पित होता है, भगवान उन्हें अपने हृदय में स्थान देते हैं। देवी लक्ष्मी जो कि भगवान विष्णु की पत्नी हैं, वह भी प्रभु की अनन्य भक्ता होने की वजह से उन्हें भगवान के हृदय में स्थान प्राप्त हुआ हैं। अतः वे लक्ष्मीवान कहे जाते हैं। उन लक्ष्मीवान् भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६२ -

ॐ समितिंजयाय नमः

युद्ध में विजेता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Ever Victorious.

समितिं युद्धं जयति इति समितिंजयः अर्थात् समिति वा युद्ध को जीतते हैं, इसलिए वे समितिंजय हैं। भगवान धर्म की रक्षा हेतु प्रतिज्ञाबद्ध हैं। अतः जब भी अधर्म की वृद्धि और धर्म का ह्रास होता है, तब धर्म की रक्षा हेतु स्वयं परमात्मा अवतरित होते हैं, और अधर्म मार्गगामी असुरों से युद्ध करते हैं, उसमें वे सदैव विजयी होते हैं। अतः वे समितिंजय कहलाते हैं।

उन युद्ध में विजेता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६३ -

ॐ विक्षराय नमः

नाशरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Imperishable.

विगतः क्षरो नाशो यस्य असौ विक्षरः अर्थात् जिनका क्षर अर्थात् नाश नहीं है, वे भगवान विक्षर हैं। परमात्मा काल से परे अजन्मा स्वरूप हैं। जिसका जन्म होता है, उन्हींका नाश होता है। परमात्मा जन्मरहित होने से काल से उत्पन्न कोई भी विकार उन्हें प्रभावित नहीं करते हैं। अतः परमात्मा का नाश नहीं होता है।

उन विनाशरहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६४ -

ॐ रोहिताय नमः

रक्तवर्णवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Incarneted as Red Fish.

स्वच्छन्दतया रोहितां मूर्तिं मत्स्यविशेषमूर्तिं वा वहन् रोहितः अर्थात् अपनी इच्छा से रोहितवर्ण मूर्ति अथवा रोहित नामक मत्स्य विशेष का स्वरूप धारण करने के कारण रोहित हैं। जब सृष्टि का प्रलय हुआ, तब भगवान स्वयं रक्तवर्ण की मत्स्य रूप में अवतरित हुए और सप्त ऋषि, औषधियां, बीज तथा प्राणियों के सूक्ष्मशरीर से भरी नाव को अपने सिंग से धारण करके उन सबकी रक्षा की, अतः वे रोहित कहे जाते हैं।

उन रक्तवर्णा मत्स्य रूप से अवतरित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६५ -

ॐ मार्गाय नमः

मुमुक्षु की खोज के केन्द्र को नमस्कार।

I salute the one who end & also the means.

मुमुक्षुवः तं देवं मार्गयन्ति इति मार्गः अर्थात् मुमुक्षुजन उस परमात्मादेव का मार्गण (खोज) करते हैं, इसलिए वे मार्ग हैं। मोक्ष की प्राप्ति अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति। परमात्मा हमारे हृदय में अपनी आत्मा की तरह से ही स्थित हैं। अज्ञान और मोह के कारण उसे हम देख नहीं पाते है। परमात्मा के ज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। मुमुक्षु ज्ञान के द्वारा उनकी खोज करते हैं, अतः वे मार्ग कहे जाते हैं। उन मुमुक्षु के खोज का केन्द्रबिन्दु परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६६ -

ॐ हेतवे नमः

जगत की उत्पत्ति के हेतुरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Cause.

उपादानं निमित्तं च कारणं स एव इति हेतुः अर्थात् संसार के निमित्त और उपादान कारण भी वही हैं, इसलिए हेतु हैं। जिस प्रकार मिट्टी से घट की उत्पत्ति में कुम्हार निमित्त कारण और मिट्टी उपादान कारण होते है। परमात्मा से भिन्न कुछ भी नहीं है, अतः वे जगत की उत्पत्ति के लिए अपनी मायाशक्ति से उपादान तथा चेतनता की दृष्टि से निमित्तकारण होते हैं।

उन अभिन्न निमित्त-उपादान कारण रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६७ -

ॐ दामोदराय नमः

दामोदर रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute Damodar.

दामानि लोकनामानि तानि यस्योदरान्तरे। तेन दामोदरो देवः श्रीधरः श्रीसमाश्रितः, इति व्यासवचनात् दामोदरः अर्थात् जिसके उदर में दाम अर्थात् लोक हैं, वे रमानिवास श्रीधरदेव इसी कारण से दामोदर कहलाते हैं। इस व्यासवचन के अनुसार भगवान दामोदर हैं। समस्त जगत परमात्मा के उपर आश्रित होने की वजह से मानों उनके उदर में समाया हुआ कहा जाता है। उन दामोदर नाम से प्रसिद्ध परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६८ -

ॐ सहाय नमः

सब के प्रति क्षमावान परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All-enduring.

सर्वान् सहते क्षमते इति वा सहः अर्थात् सबको क्षमा करते हैं, इसलिए सह हैं। इस सृष्टि में अनेकों लोग भगवान के होने की श्रद्धा से युक्त होते है, तथा अनेकों लोग ऐसे भी होते है, जो परमात्मा के अस्तित्व की न केवल श्रद्धा से रहित होते है, किन्तु उनका सकारात्मक रूप से खण्डन भी करते है, तथापि परमात्मा उन्हें भी समान रूप से जीवन प्रदान करते हैं। एवं वे सब के प्रति क्षमावान होते हैं।

उन सब को क्षमा करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६९ -

ॐ महीधराय नमः

पृथ्वी धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Bearer of Earth.

महीं गिरिरूपेण धरति इति महीधरः, 'वनानि विष्णुः गिरयो दिशश्च इति विष्णुपुराणे। अर्थात् पर्वतरूप होकर पृथ्वी को धारण करते हैं, इसलिए महीधर है। विष्णुपुराण में कहा गया हैं कि 'वन, पर्वत और दिशाएं विष्णु ही हैं।' इस सृष्टि में जो कुछ भी है, उन सब रूपों में परमात्मा स्वयं अभिव्यक्त हुए हैं। वे ही सभी को धारण करनोली पृथ्वी को भी धारण करते हैं। अतः वे महीधर हैं।

उन महीधर रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३७० -

ॐ महाभागाय नमः

महान भोक्ता रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who ultimate experiencer

स्वेच्छया धारणन् देहं महान्ति उत्कृष्टानि भोजनानि भागजन्यानि भुंक्ते इति महाभागः अर्थात् स्वेच्छा से देह धारण करके महान् उत्कृष्ट भोजनों को परं ऐश्वर्य से भोगते हैं, इसलिए महाभाग हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके स्वेच्छा से कोई भी शरीर धारण करने में समर्थ व स्वतंत्र हैं। आवश्यकता अनुसार वे शरीर धारण करके उसके माध्यम से भोग को वे ही ग्रहण करते हैं। अतः वे महाभाग हैं।

उन महाभाग परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३७१ –

ॐ वेगवते नमः

सब से तीव्र गतिवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Swiftest.

वेगो जवः तद्वान् वेगवान् 'अनेजदेकं मनसो जवीयः' इति श्रुतेः। वेग तीव्र गति को कहते हैं, तीव्र गतिवाले होने के कारण भगवान वेगवान हैं। जगत में सब से तीव्र गतिवाला मन है। मन की कल्पना और संकल्प के द्वारा एक क्षण मात्र में अति दूर पहुंचा जा सकता है। किन्तु मन से भी वेगवान परमात्मा हैं, क्योंकि मन जहां पर भी पहुंचता है, उस देश में भी ज्ञेय वस्तु को अस्तित्व प्रदान करनेवाले परमात्मा पहले से ही वहां मौजूद होते हैं। अतः उन्हें सब से तीव्र गतिवाले कहा जाता है। उन तीव्र गतिवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३७२ -

ॐ अमिताशनाय नमः

विश्व को खानेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Consumer.

संहारसमये विश्वम् अश्नाति इति अमिताशनः अर्थात् संहार के समय सारे विश्व को खा जाते हैं इसलिए अमिताशन हैं। जब सृष्टि का संहार होता है, तो जगत परमात्मा में ही विलीन हो जाता है, मानों परमात्मा ही जगत को ग्रस लेते हैं। अतः असीम जगत को खानेवाले परमात्मा अमिताशन कहे जाते हैं।

उन अमिताशन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३७३ -

ॐ उद्भवाय नमः

संसारिकता से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is above the Samsara.

उद्गतो भवात् संसाराद् इति उद्भवः, अर्थात् जो संसार से उपर हैं, वे उद्भव हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके स्वयं जगत की तरह अभिव्यक्त होते हैं, तथापि वे जगत के जन्म-मृत्यु आदि षड्विकार से प्रभावित नहीं हैं। अतः इससे परे हैं। जैसे लहर के जन्म-मरण के धर्म उसे आत्मवान करने वाले जल को प्रभावित नहीं करते हैं, अतः जल को लहर से परे कहा जाता है।

उन संसार के दोषों से परे परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३७४ -

ॐ क्षोभणाय नमः

क्षुब्ध करनेवाने परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Agitator.

सर्गकाले प्रकृतिं पुरुषं च प्रविश्य क्षोभयामास इति क्षोभणः अर्थात् जो जगत की उत्पत्ति के समय प्रकृति और पुरुष में प्रविष्ट होकर उन्हें क्षुब्ध करते हैं, इसलिए वे क्षोभण हैं। सृष्टि के पूर्व परमात्मा जड़रूपा प्रकृति में प्रवेश करके उनमें क्षोभ उत्पन्न करते हैं, जिससे वह जीवन्त हो उठती है। बाद में प्रलय के समय भी वे इनसे अलग होते हुए पुनः इनको क्षुब्घ करते हैं। प्रकृति और पुरुष ऐसे जीवन्त बनानेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३७५ -

ॐ देवाय नमः

स्वप्रकाशस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Illuminating Consciousness.

यतो दीव्यति क्रीडति सर्गादिभिः, व्यवहरति सर्व –भूतेषु, आत्मतया द्योतते, तस्मात् देवः अर्थात् सृष्टि आदि से क्रीडा करते हैं, समस्त भूतों में व्यवहार करते हैं, अन्तरात्मारूप से प्रकाशित होते हैं, इसलिए वे देव हैं। सब की अन्तरात्मा रूप से स्वयं प्रकाशित परमात्मा ही अनेकों शक्तिशाली देवताओं की तरह स्थित है। वे ही सब के अन्तर्यामी है। सृष्टा, पालयिता और विनाशक बनकर सृष्टि के साथ मानों क्रीडा करनेवाले शक्तिशाली हैं। उन स्वप्रकाशस्वरूप, समर्थ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३७८ -

ॐ श्रीगर्भाय नमः

विभूतियुक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Repository of Glories.

श्रीः विभूतिः यस्योदरान्तरे जगद् रूपा यस्य गर्भे स्थिता सः श्रीगर्भः अर्थात् जिनके उदर वा गर्भ में संसाररूप श्री अर्थात् विभूति स्थित है, वे भगवान श्रीगर्भ हैं। पंचमहाभूत का बना हुआ जगत अत्यन्त सुन्दर कलाकृति है, जो अद्भुत व्यवस्था, विचित्रता, और विविधता का संगम है। उसकी उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय भी आश्चर्यजनक है। ऐसा अद्भुत जगत परमात्मा की विभूति है तथा उन पर अर्थात् उनके उदर में आश्रित है। अतः परमात्मा श्रीगर्भ कहे जाते हैं। उन श्रीगर्भ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३७७ -

ॐ परमेश्वराय नमः

परमेश्वर को नमस्कार।

I salute the one who is the Supreme Lord.

परमश्च असौ ईशनशीलश्च इति परमेश्वरः अर्थात् परम हैं और ईशनशील हैं, इसलिए वे परमेश्वर हैं। इस अद्भुत विविधतापूर्ण जगत में सुन्दर व्यवस्था दिखती है। जिसकी वजह से अद्भुत सन्तुलन बना हुआ है। ऐसे जगत का शासक और कोई नहीं, स्वयं परमात्मा ही हैं। वे शासन करते हैं, किन्तु कहीं पर भी स्वयं दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। ऐसे सर्व श्रेष्ठ शासक होने की वजह से परमेश्वर हैं। उन परमेश्वर को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३७८ -

ॐ करणाय नमः

साधन रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is an instrumental Cause.

जगत् उत्पत्तौ साधकतमं करणम् अर्थात् संसार की उत्पत्ति के सब से बड़े साधन हैं, इसलिए करण हैं। किसी भी वस्तु की उत्पत्ति में उपादान और निमित्त कारण की अपेक्षा होती है। जिस प्रकार घट की उत्पत्ति में माटी उपादान कारण तथा कुम्हार निमित्त कारण है, उसी प्रकार सृष्टि की उत्पत्ति में परमात्मा स्वयं उसे सत्ता–स्फूर्ति प्रदान करने के द्वारा निमित्त बनते हैं। वे निमित्त कारण होने की वजह से करण कहे जाते हैं। उन सृष्टि के हेतु करणरूपा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३७९ –

ॐ कारणाय नमः

सृष्टि हेतु कारण रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Material Cause.

उपादानं निमित्तं च कारणम् अर्थात् जगत के उपादान और निमित्त कारण हैं, इसलिए वे कारण हैं। घट की उत्पत्ति हेतु निमित्त कारण कुम्हार तथा उपादान कारण माटी होती है। सृष्टि हेतु माया की दृष्टि से परमात्मा स्वयं ही उपादान कारण तथा चेतना की दृष्टि से निमित्त कारण अर्थात् सृष्टि के अभिन्न निमित्त उपादान कारण हैं। अतः वे कारण कहे जाते हैं। उन जगत के कारण रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३८० -

ॐ कर्त्रे नमः

स्वतंत्र कर्ता रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Doer.

कर्ता स्वतन्त्रः अर्थात् स्वतंत्र होने से कर्ता हैं। जीव के कर्तापन के पीछे उसकी अपूर्णता तथा उसकी वजह से भोक्तृत्व होता है। भोक्तापन की वजह से कर्ता बनना स्वतंत्रता नहीं किन्तु मजबुरी होती है। परमात्मा सृष्टि, स्थिति और प्रलय के कर्ता बनते हैं, किन्तु वे पूर्णस्वरूप होने की वजह से उनमें किसी प्रकार की मजबुरी वा पराधीनता नहीं है, किन्तु कर्ता बनना उनकी स्वतंत्रता है।

उन स्वतंत्र कर्ता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३८१ –

ॐ विकर्त्रे नमः

विचित्र रचना करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Creator of the Cosmos.

विचित्रं भुवनं क्रियते इति विकर्ता स एव भगवान् विष्णुः अर्थात् विचित्र भुवनों की रचना करते हैं, इसलिए वे भगवान विकर्ता हैं। परमात्मा के द्वारा रचित इस सृष्टि में विविध लोक और भुवन विद्यमान है। वे सब जीवों के पाप–पुण्य के भोग के अनुरूप विविध प्रकार के चित्र–विचित्र भोगों से परिपूर्ण है, ऐसे विचित्रता पूर्ण सृष्टि की रचना करने की वजह से वे विकर्ता कहे जाते हैं।

उन विचित्र सृष्टि के रचयिता को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३८२ -

ॐ गहनाय नमः

रहस्यमय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Inscrutable.

स्वरूपं सामर्थ्यं चेष्टितं वा तस्य ज्ञातुं न शक्यते इति गहनः अर्थात् उनका स्वरूप, सामर्थ्य अथवा कृत्य जाना नहीं जाता, इसलिए गहन हैं। परमात्मा का स्वरूप किसी भी करण के द्वारा ग्राह्य नहीं हैं। वे अविषय होते हुए भी माया से ऐसा रूप धारण करते हैं, जिससे वे ग्राह्य भी हो जाते हैं। वे समस्त करणों से रहित होते हुए भी जगत की सृष्टि, स्थिति और संहार जैसे अद्भुत कार्य सम्पन्न कर लेते हैं। वे जीव की सीमित बुद्धि से समझे नहीं जा सकते हैं। अतः गहन कहे जाते हैं। उन रहस्यमय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३८३ -

ॐ गुहाय नमः

माया से छिपे हुए परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Concealed by his Maya.

गूहते संवृणोति स्वरूपादि निजमायया इति गुहः अर्थात् अपनी माया से स्वरूप आदि को ग्रस्त करते है, अर्थात् ढ़क लेते हैं, इसलिए गुह हैं। परमात्मा की मायाशक्ति इतनी प्रभावी है कि परमात्मा सर्वव्यापी तथा हमारी आत्मा की तरह स्थित होते हुए भी उन्हें हम नहीं देख पाते हैं। क्योंकि उनकी माया से हमारी दृष्टि आवरित हो जाती है। अतः वे गुह कहलाते हैं। उन माया से छिपे हुए परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३८४ –

ॐ व्यवसायाय नमः

ज्ञानस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Pure Consciousness.

संविन्मात्रस्वरूपत्वात् व्यवसायः अर्थात् ज्ञान मात्र स्वरूप होने से व्यवसाय हैं। व्यवसाय का अर्थ निश्चय होता है। बुद्धि किसी भी ज्ञान के उपरान्त निश्चय करती है। जिन बुद्धि से ज्ञान प्राप्त किया जाता है, परमात्मा उनकी भी आत्मा हैं तथा स्वयं ज्ञानस्वरूप हैं। अतः उन्हें जानने हेतु अन्य बुद्धि आदि साधन की अपेक्षा नहीं है। अतः वे व्यवसाय कहे जाते हैं।

उन व्यवसाय स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३८५ -

ॐ व्यवस्थानाय नमः

जगत के अधिष्ठानभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Basis of all.

यस्मिन् व्यवस्थितिः सर्वस्य इति व्यवस्थानः, जिनमें सब की व्यवस्था है, वे व्यवस्थान हैं। परमात्मा ही इन विविधतापूर्ण जगत के अधिष्ठानभूत तत्त्व हैं। जगत की उत्पत्ति तथा उसके संचालन के सभी नियम और व्यवस्था उनसे ही होते हैं। अतः वे व्यवस्थान कहलाते हैं।

उन व्यवस्थान अर्थात् अधिष्ठानरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३८६ -

ॐ संस्थानाय नमः

प्रलय स्थान रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the

Absorber of All.

अत्र भूतानां संस्थितिः प्रलयात्मिका, समीचीनं स्थानम् अस्य इति वा संस्थानः अर्थात् भगवान् में प्राणियों की प्रलयरूप स्थिति है, वे उस प्रलय के सम्यक् स्थान हैं, इसलिए वे संस्थान हैं। जगत का प्रलय होने पर समस्त जगत अव्यक्त में चला जाता है। यह अव्यक्त अर्थात् माया परमात्मा पर आश्रित होने से वे प्रलय के संस्थान कहलाते हैं।

उन प्रलय स्थानरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३८७ -

ॐ स्थानदाय नमः

जीवों को कर्मानुरूप स्थान देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Conferer of Abode.

ध्रुवादीनां कर्मानुरूपं स्थानं ददाति इति स्थानदः अर्थात् ध्रुवादिकों को उनके कर्मो के अनुसार स्थान देते हैं, इसलिए वे स्थानद हैं। जब ध्रुव ने तपस्या करके भगवान को प्रसन्न किया, तब उन्हें अन्तरिक्ष में स्थिर स्थान प्रदान किया। उसी प्रकार प्रत्येक जीवों को उनके कर्मो तथा पात्रता के अनुरूप उन्हें स्थान प्रदान करने के कारण वे स्थानद कहलाते हैं।

उन कर्मानुरूप सबको स्थान देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३८८ -

ॐ ध्रुवाय नमः

अविनाशी रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Steadfast.

अविनाशित्वात् ध्रुवः अर्थात् अविनाशी होने के कारण ध्रुव हैं। परमात्मा अविनाशी हैं। किसी भी वस्तु का नाश स्वतः वा परतः होता हैं। परमात्मा से अन्यत कुछ है ही नहीं अतः उनका परतः नाश सम्भव नहीं है। तथा वे अवयवों से रहित होने की वजह से उनका स्वतः नाश भी सम्भव नहीं। एवं परमात्मा अविनाशी स्वरूप हैं।

उन अविनाशी स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३८९ –

ॐ परर्द्धये नमः

श्रेष्ठ विभूति वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is te Most Glorious.

परा ऋद्धिः विभूतिः अस्य इति परर्द्धिः अर्थात् भगवान की विभूति परा अर्थात् श्रेष्ठ है, इसलिए वे परर्द्धि हैं। परमात्मा में ही जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय होते है, किन्तु वे उनसे असंग और अलिप्त रहते हैं। ऐसी उत्पत्ति आदि करनेवाली उनकी श्रेष्ठ विभूति होने के कारण वे परर्द्धि कहलाते हैं।

उन श्रेष्ठ विभूतिवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९० -

ॐ परमस्पष्टाय नमः

परमस्पष्ट परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Absolutely Vivid.

सर्वोत्कृष्टो वा अनन्याधीनसिद्धत्वात्, संविदात्मतया स्पष्टः परमस्पष्टः अर्थात् बिना किसी अन्य के आश्रय के ही सिद्ध होने के कारण सर्वश्रेष्ठ हैं, तथा ज्ञानस्वरूप होने से स्पष्ट हैं, इस प्रकार परम और स्पष्ट होने से वे परमस्पष्ट हैं। जगत तथा उसका कारण माया परमात्मा के प्रति आश्रित है, किन्तु परमात्मा स्वयं स्वतंत्र होने से परं हैं, तथा वे स्वतःसिद्ध होने से उन्हें जानने हेतु किसी करण की आवश्यकता नहीं होने से वे स्पष्ट हैं।

उन परमस्पष्ट परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९१ -

ॐ तुष्टाय नमः

संतुष्ट परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Ever Contented.

परमानन्दैकरूपत्वात् अर्थात् एकमात्र परमानन्दस्वरूप होने के कारण तुष्ट हैं। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप हैं, उनका आनन्द देश, काल वा वस्तु से सीमित नहीं होता है तथा उनका आनन्द हेतु किसी भी वस्तु, व्यक्ति वा परिस्थिति पर आश्रित नहीं हैं। इस प्रकार वे अनाश्रित रूप से अपने आपमें संतुष्ट हैं।

उन अपने आपमें संतुष्ट परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९२ -

ॐ पुष्टाय नमः

सर्वत्र परिपूर्ण परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is ever Full.

सर्वत्र सम्पूर्णत्वात् पुष्टः अर्थात् सर्वत्र परिपूर्ण होने से वे पुष्ट हैं। परमात्मा समस्त देश, काल वा वस्तु की सीमा से रहित हैं। वे समस्त देश, काल और वस्तु में व्याप्त सर्वत्र परिपूर्ण हैं। जिस प्रकार समुद्र जल से चारो ओर परिपूर्ण है, उसमें नदियां कितना भी जल डालें, उससे उनमें न बाढ़ आ सकती है, और सूर्य की प्रचण्ड गरमी से न सूखता है। उसी प्रकार परमात्मा सर्वत्र परिपूर्ण हैं। अतः वे पुष्ट हैं। उन सर्वत्र परिपूर्ण परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९३ -

ॐ शुभेक्षणाय नमः

शुभ दर्शनवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one whose Gaze is Auspicious.

ईक्षणं दर्शनं यस्य शुभं शुभकरं मुमुक्षूणां मोक्षदं भोगार्थिनां भोगदं सर्वसन्देहविच्छेदकारणं पापिनां पावनं हृदयग्रन्थेः विच्छेदकरं सर्वकर्मणां क्षपणम् अविद्यायाश्च निवर्तकं स शुभेक्षणः अर्थात् जिनके दर्शन सर्वथा शुभ करनेवाल, मुमुक्षु को मोक्ष देनवाला, भोगार्थियों को भोग देनेवाला, समस्त संशयों को नष्ट करनेवला, पापियों को पावन करनेवाला, हृदयग्रंथि का भेदन करनेवाला, समस्त कर्मों को नष्ट करनेवाला और अविद्या को नष्ट करनेवाला है, वे भगवान शुभेक्षण हैं।

उन पावनकारी दर्शनवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९४ -

ॐ रामाय नमः

रमणयोग्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is worth revelling.

नित्यानन्दलक्षणे अस्मिन् योगिनो रमन्ते इति रामः अर्थात् नित्यानन्दस्वरूप भगवान् में योगिजन रमण करते हैं, इसलिए वे राम हैं। आनन्दस्वरूप परमात्मा सब की आत्मा की तरह सब के हृदय में विराजमान हैं। योगिजन बाहरी जगत से विरत होकर अन्तर्मुख होकर उनके दर्शन कर लेते हैं, तथा अपनी पूर्णस्वरूपता में रमते हैं, इसलिए परमात्मा राम कहे जाते हैं।

उन योगिजनों के रमण के आस्पद रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३९५ –

ॐ विरामाय नमः

विराम रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Highest Repose.

विरामो अवसानं प्राणिनाम् अस्मिन्निति विरामः भगवान् में प्राणियों का विराम अर्थात् अन्त होता है, इसलिए वे विराम हैं। प्रलय काले समस्त प्राणीजगत परमात्मा में ही लय को प्राप्त होते हैं, अथवा सुषुप्ति काल में भी सभी जीव उसीमें लय को प्राप्त होते है; इसलिए परमात्मा विराम कहे जाते हैं।

उन विराम स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९६ -

ॐ विरजाय नमः

रागरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Free from Attachments.

विगतं रजं अस्य विषयसेवायामिति विरजः अर्थात् विषयसेवन में जिनका राग नहीं रहा है, वे भगवान विरज हैं। राग और द्वेष अपने अन्दर अपूर्णता की वजह से बाह्य जगत के प्रति सुखादि हेतु पराधीनता है। जो स्वयं पूर्णस्वरूप, अपने होने मात्र में संतुष्ट हो, उनमें किसी भी प्रकार के सुखादि की न तो अपेक्षा होती है और न ही उसके प्रति पराधीनता होती है। अतः उससे उत्पन्न रागादि का भी अभाव होता है। परमात्मा स्वयं पूर्ण होने की वजह से उनमें राग का अभाव है। अतः वे विरज हैं। उन विरजरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९७ -

ॐ मार्गाय नमः

मोक्ष के पथ रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Path to Immortality.

यं विदित्वा अमृतत्वाय कल्पन्ते योगिनो मुमुक्षवः स एव पन्थाः मार्गः अर्थात् जिन्हें जानकर मुमुक्षुजन अमर हो जाते हैं, वे ही पथ अर्थात् मार्ग है। परमात्मा स्वयं अपनी आत्मा की तरह होते हुए भी अज्ञानवशात् हम अपने आपको एक संकुचित व अपूर्ण जीव मान लेते हैं, इसकी वजह से ही संसार की प्राप्ति होती है। वेदान्त प्रतिपादित परमात्मा का आत्मस्वरूपतया ज्ञान ही मुक्ति का हेतु है। परमात्मा का ज्ञान ही मोक्ष का मार्ग होने के कारण वे मार्ग कहे जाते हैं। उन मोक्ष के मार्गरूप परमेश्वर को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९८ -

ॐ नेयाय नमः

जीवरूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is potentially Complete.

मार्गेण सम्यग्ज्ञानेन जीवः परमात्मतया नीयते इति जीवः अर्थात् मार्ग से अर्थात् सम्यक् ज्ञान से जीव परमात्मभाव को ले जाया जाता है, इसीलिए वह जीव नेय हैं। जीव में अपने स्वस्वरूप का अज्ञान होने के कारण जीव ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवभाव की समाप्ति करता है। इस प्रकार जीव अपनी ही परमात्म स्वरूपता में ज्ञान के द्वारा ले जाया जाता है। अतः परमात्मा जीवरूप से नेय हैं।

उन जीवरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९९ -

ॐ नयाय नमः

स्वरूप में जगानेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Leader.

नयति इति नयः नेता अर्थात् जो ले जाता है, वह नेता नय कहलाता है। जीव ज्ञान के द्वारा अपनी परमात्मस्वरूपता में ले जाया जाता हैं। परन्तु यह जीव के सीमित प्रयासों से सम्भव नहीं होता है, परमात्मा ही शास्त्र और गुरु के माध्यम से कृपा करते हैं, और जीवभाव को निषेध करके अपने स्वरूप की ओर ले जाते हैं। अतः जीव को परमात्म स्वरूपता में ले जाने के कारण वे नय कहलाते हैं। उन नय रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४०० -

ॐ अनयाय नमः

नेतारहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is without Leader.

नास्य नेता विद्यते इति अनयः अर्थात् भगवान् के कोई और नेता नहीं होने से वे अनय कहलाते हैं। परमात्मा सब को मोक्ष की ओर ले जाते हैं। किन्तु परमात्मा स्वयं मुक्तस्वरूप होने से, सर्वव्यापी होने से तथा उनसे पृथक् न देश, काल, वस्तु अथवा व्यक्ति का अस्तित्व होने से उन्हें न तो कहीं ले जाया जा सकता है, और न ही इसकी आवश्यकता है। अतः वे अनय स्वरूप हैं।

उन अनय स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।